TEACHERS OF BIHAR

The Change Makers

पद्यपंकज

बिहार के शिक्षकों द्वारा रचित

सितम्बर 2024

भाग 1

मासिक कविता संग्रह

teachersofbihar.padyapankaj.org

पद्यपंकज काव्य संग्रह

यह किताब टीचर्स ऑफ़ बिहार के तरफ़ से प्रकाशित किया जा रहा है। इस प्रकाशन में बिहार के शिक्षकों द्वारा स्वरचित कवितायें प्रकाशित हैं।

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक का विक्रय नहीं किया जा सकता है। यह केवल पढ़ने के उद्देश्य से निःशुल्क उपलब्ध है।
- यह कविता 'Teachers of Bihar' की संपत्ति है। इसे किसी भी प्रकाशक या अन्य लेखक द्वारा उपयोग नहीं किया जा सकता है।
- पत्रिका के सभी लेख, चित्र और सामग्री के अधिकार लेखक और प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं।
- पत्रिका के किसी भाग को बिना पूर्व अनुमति के पुनः प्रकाशित या वितरित नहीं किया जा सकता है।

प्रकाशन सहयोग

संपादक

देव कांत मिश्रा

मध्य विद्यालय धवलपुरा,सुलतानगंज, भागलपुर(टीम लीडर)

संकलनकर्ता

अनुपमा प्रियदर्शिनी

रा० उ० मध्य विद्यालय, दूधहन, रघुनाथपुर सिवान

आवरण एवं चित्रण

अनुपमा प्रियदर्शिनी

रा० उ० मध्य विद्यालय, दूधहन,रघुनाथपुर सिवान

तकनीकी सहयोग

ई ० शिवेंद्र प्रकाश सुमन

प्रिय साथियों,

आज हम एक विशेष अवसर का स्वागत करने के लिए एकत्रित हुए हैं, जब हम 'पद्यपंकज' काव्य संग्रह का विमोचन कर रहे हैं। यह संग्रह न केवल एक पुस्तक है, बल्कि यह बिहार के शिक्षकों की भावनाओं, विचारों और रचनात्मकता का प्रतीक भी है। हिंदी दिवस के इस पावन अवसर पर, हम सभी मिलकर अपने भाषा और साहित्य की समृद्धि को मान्यता देते हैं और इस काव्य संग्रह के माध्यम से अपने विचारों को साझा करते हैं।

बिहार, जो हमेशा से शिक्षा और संस्कृति का गढ़ रहा है, यहाँ के शिक्षकों ने इस संग्रह के माध्यम से अपनी अभिव्यक्ति को प्रस्तुत किया है। यह कविताएँ न केवल शिक्षकों के व्यक्तिगत अनुभवों का दर्पण हैं, बल्कि समाज में उनके योगदान और संघर्षों की कहानी भी कहती हैं। प्रत्येक कविता एक अनूठा दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, जिसमें जीवन के विभिन्न पहलुओं को छुआ गया है—प्रेम, संघर्ष, समाज, और प्रकृति।
हम हिंदी दिवस के अवसर पर इस काव्य संग्रह का विमोचन कर रहे हैं, जो हमारी मातृभाषा हिंदी के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। हिंदी, जो हमारी संस्कृति, परंपरा और पहचान का एक अभिन्न हिस्सा है, इसे संजीवनी प्रदान करना हमारे सभी का कर्तव्य है। इस संग्रह के माध्यम से हम हिंदी भाषा को समृद्ध करने के लिए एक कदम आगे बढ़ा रहे हैं। यह हमें अपने विचारों को अभिव्यक्त करने और समाज में अपनी आवाज उठाने का एक सशक्त माध्यम प्रदान करता है।
इस काव्य संग्रह के माध्यम से हम समाज में सकारात्मक परिवर्तन की ओर एक कदम बढ़ाने की कोशिश कर रहे हैं। हम सभी जानते हैं कि साहित्य समाज का आईना होता है। इस संग्रह में कवियों ने समाज की विडंबनाओं, संघर्षों और उम्मीदों को चित्रित किया है। ये कविताएँ न केवल मनोरंजन का साधन हैं, बल्कि ये सोचने और विचार करने के लिए भी प्रेरित करती हैं। हम आशा करते हैं कि यह काव्य संग्रह न केवल शिक्षकों के लिए, बल्कि सभी पाठकों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगा।

हमारा यह प्रयास तब सफल होगा जब आप सभी का सहयोग और समर्थन हमें प्राप्त होगा। इस संग्रह को पढ़ें, विचार करें और अपने अनुभव साझा करें। हमें आपकी प्रतिक्रिया की आवश्यकता है ताकि हम आगे भी ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन कर सकें।

आखिर में, हम 'पद्यपंकज' काव्य संग्रह के सभी लेखकों को बधाई देता हैं, जिन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से अपने विचारों को व्यक्त किया। हम आशा करते हैं कि यह संग्रह सभी को प्रेरित करेगा और हमारी संस्कृति को समृद्ध करेगा।

धन्यवाद!
—टीचर्स ऑफ बिहार

सम्पादक की कलम से....

आएँ! नई कविता रचाएँ।
औरों का नित ज्ञान बढ़ाएँ।।
'पद्यपंकज' उत्पल खिलाएँ।
टीओबी बगिया महकाएँ।।

प्यारे साथियों,
'पद्यपंकज' रचनाकारों हेतु टीचर्स आफ बिहार का एक सुंदर बाग है जिसमें भाँति- भाँति कविता रूपी प्रसून समयानुसार खिलते हैं और विचारों की पवित्र धाराओं और विभिन्न तरह की प्रेरणास्पद रचनाओं से सराबोर कर इसके बाग को सुरभित करते रहते हैं। इसी क्रम में एक पावन विचार मन में आया कि क्यों न एक 'मासिक कविता संग्रह' का बाग लगाया जाए तथा समग्र प्रयास से इसे पुष्पित और पल्लवित किया जाए? ऐसा विचार पाकर मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है।

गाँधी जयन्ती के शुभ अवसर पर सत्य, लगन, निष्ठा, परस्पर सद्भाव व सहयोग की राह को अपनाते एवं यथार्थ के धरातल पर अपने विचारों को तर्क की कसौटी पर कसते तथा मद्देनजर रखते हुए सहर्ष कह रहा हूँ कि यह मासिक कविता संग्रह न केवल शिक्षकों के लिए अपितु सभी पाठकों के लिए उपयुक्त व प्रेरणा का स्रोत बनेगा। हमारा प्रयास तभी सार्थक होगा जब आपका समुचित सहयोग व समर्थन अंतर्मन से होगा। बगैर आपके टीओबी की बगिया कैसे महकेगी? इसके लिए आपका सद्विचार, चिंतन व सहयोग ही हमें कामयाबी दिलाएगी।
अंत में, पद्यपंकज 'मासिक कविता संग्रह' के सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं जो समय-समय पर अपनी रचना से समूह तथा अपनी लेखनी को सुशोभित करते हैं तथा अपना अभिमत देते हैं।हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि यह मासिक कविता संग्रह आपको नई दिशा व प्रेरणा प्रदान करेगी। आप अपनी प्रतिक्रिया व अनुभव को सतत् साझा करते रहें।

देव कांत मिश्र 'दिव्य'
संपादक

दूर तक चलते हुए

घर की ओर लौटता आदमी
होता नहीं कभी खाली हाथ
हथेलियों की लकीरों संग
लौटती हैं अक्सर उसके
अभिलाषाएं, उम्मीद, सुकून
और थोड़ी निराशा

घर लौटते उसके लकदक कदम
छोड़ते नहीं अपने पीछे पदचाप
धुंध सी उड़ जाती है कहीं
स्याह चेहरे के अनगढ़े अवसाद

आदमी डूब जाता है हर सांझ
पहाड़ों के मध्य
या फिर किन्हीं दरारों में
फिर से उग आने की
अपनी उन्हीं ख्वाहिशों में

आदमी का लौटना
सिर्फ उसका लौटना नहीं
बोझिल होती सांसो का हल्कापन हैं
जिसके तय करने को फासले
लौटते हैं उसके कदम
घर की ओर

शिल्पी
मध्य विद्यालय सैनो
जगदीशपुर भागलपु

सूरज भैया

सूरज भैया सूरज भैया

क्यों है तुम्हारे गाल लाल

क्या मम्मी ने तुम्हें डाँटा है

या पापा ने मारा तमाचा है?

ये गुलाबी नहीं दिखते मुझको

तुम्हारे अंगारों से भरे, ये गाल

लगता मुझको ऐसे, जैसे किसी ने

किया है तुम्हारा बहुत बुरा हाल|

क्या दीदी ने तुम्हे डाँटा है

या भैया ने मारा चाँटा है?

सब कुछ है कुशल, फिर

क्यों? आसमान में लिए फिर रहे हो

ये लाल-लाल गाल।

तुम्हारी लाल-लाल गाल से,

हम सब हैं बहुत बेहाल।

हम सब हैं बहुत बेहाल।।

तुम्हारी गुलाबी गाल का,

हमें है बहुत इंतज़ार।

हमें है बहुत इंतज़ार।।

अवनीश कुमार

प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय विष्णुपुर, बेगूसराय

शिक्षक की गरिमा

आज शत शत नमन करें उनका,
जिन्होंने शिक्षा का दीप जलाया।
हम सबने उस ज्योति शिखा को,
हर पल अपने गले लगाया।।
नमन करें उस राष्ट्र शिक्षक को,
जिनने शिक्षक का मान बढ़ाया।
हर वर्ष उनकी शुभ जयंती पर ,
है सबने श्रद्धा सुमन चढ़ाया।।
नमन करें उन पुरोधा को,
जिनने शिक्षक की गरिमा बढ़ाई।
राष्ट्र निर्माता बनकर उन्होंने,
हर दिल में अमर ज्योति जलाई।।

नमन करें हम उन गुरुओं का,
जिन्होंने अक्षर ज्ञान कराया।
हम सबको पढ़ने को प्रेरित कर ,
सबमें ज्ञान की ज्योति जलाया।।
नमन करें उन भाई-बहनों का,
जो शिक्षक का दायित्त्व निभाते हैं।
उनके कंधों पर महती जिम्मेवारी
जो बच्चों को सही राह बताते हैं।।
है शिक्षक की भूमिका निराली,
हर बच्चे में भर दें खुशियाली।
शिक्षक यत्न करें पूरे दिल से,
यह अमूल्य समय कभी जाए न खाली।।

शिक्षक जीवन की यही पहचान,
धरती, अंबर उनके फरमान।
बसते सदा बच्चों में जान ,
केवल उनके ऊपर हैं भगवान।।
बिना शिक्षक के ज्ञान न होता,
है बिना ज्ञान के सब बेकार।
हैं शिक्षक ज्ञान के आगार,
न इनके बिना होता उद्धार।।
ज्ञान ही अनमोल रत्न है,
जिसे चोर नहीं चुरा सकता।
खर्च करो नित बढ़ता जाए ,
न कोई कभी बाँट सकता।।

इससे दशा, दिशा मिलती है,
हर गुरुओं के नित प्रांगण में।
इससे ही तय होता सब ,
हर कार्य क्षेत्र समरांगन में।।
ऐसे अनमोल धन को जिनसे पाएँ,
उनको याद सदा दिल में रखना।
गुरुओं के प्रति श्रद्धा तुम्हारी,
उन्हें मन में बसाए सदा रखना।।
अपने-अपने गुरुजनों का,
कभी दिल दुखाया मत करना।
उनसे हर दिन शिक्षा लेकर,
नित आगे ही बढ़ते रहना।।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर विद्यालय बैंगरा
प्रखंड- बंदरा, जिला- मुजफ्फरपुर

मैं शिक्षक

मैं शिक्षक,
मैं कुंभकार हूँ।
देश के भविष्य को,
गढ़ता हूँ, मढ़ता हूँ।
मैं शिक्षक,
मैं कुंभकार हूँ।
बुद्धि से कौशल से,
क्रीड़ा से कर्म से,
ज्ञान से विज्ञान से,
श्रद्धा से विश्वास से,
गढ़ता हूँ, मढ़ता हूँ,
देश के भविष्य में,
संभावनाओं को भरता हूँ।
मैं शिक्षक,
मैं कुंभकार हूँ।
श्रम से सम्मान से,
कौशल से प्रभाव से,
सूचना से संस्कार से,
अन्वेषण आचार से,
गढ़ता हूँ, मढ़ता हूँ।

मैं शिक्षक,
मैं कुंभकार हूँ।
श्रम से सम्मान से,
कौशल से प्रभाव से,
सूचना से संस्कार से,
अन्वेषण आचार से,
गढ़ता हूँ, मढ़ता हूँ।
देश के भविष्य में ,
संभावनाओं को भरता हूँ।
मैं शिक्षक,
मैं कुंभकार हूँ।
रुचि से रुझान से ,
शिक्षा से सिद्धांत से,
अनुशासन से आदर्श से,
सुझाव से संवाद से,
गढ़ता हूँ, मढ़ता हूँ,
देश के भविष्य में ,
संभावनाओं को भरता हूँ।
मैं शिक्षक,
मैं कुंभकार हूँ।

प्रियंका कुमारी

उ॰ म॰ वि. बुढ़ी
कुचायकोट, गोपालगंज

गुरु हमारे वो कहलाते

ज्ञान चक्षु से जो सिखलाते
सही-ग़लत को जो समझाते,
विषयक ज्ञान सदा जो देते,
नैतिक मूल्यों को बतलाते,
व्यवहारिकता को जो समझाते,
गुरु हमारे वो कहलाते।
नैतिकता का सदा जो पाठ पढ़ाते,
कर्तव्य पर आरुढ़ चलना सिखलाते
लाख तूफानों से लड़ना बतलाते,
ज्ञान-दीप की ज्योत दिखलाते,
अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाते,
संस्कार के सभी गुण जो सिखलाते,
गुरु हमारे वो कहलाते।

अनुशासन की नींव जो डालते,
जीवन के कई अधिमान बताते,
कर्तव्य न अपना छोड़ सिखाते,
त्याग समर्पण को सदा बतलाते,
गुरु हमारे वो कहलाते।
सबको ज्ञान सदा बाँटते जाते,
दिवस दर दिवस ज्ञान बढ़ाते,
शिक्षार्थी की ताकत होती कलम,
कलम है तलवार से बढ़कर,
कलम को अपना हथियार बताते,
शिक्षार्थी को सु-पथ पर जो ले जाते,
गुरु हमारे वो कहलाते।
दुनिया में गुरु के बिना ज्ञान नहीं
लाख कंटकों से पार करना सिखलाते,
कठिन प्रश्न को हल कर्ता बन जाते,
दिन दुनिया की हर खबर बतलाते,
कुशल व्यवहार पाठ जो पढ़ाते,
चरित्रवान जो हमें बनाते,
गुरु हमारे वो के कहलाते।

अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाते
मार्गदर्शन सही हमेशा जो देते,
गुरु शिष्य की परंपरा में,
रोज जीवन में नया रंग हैं भरते,
पृथ्वी से तारों के बीच का विज्ञान,
इतिहास, भूगोल एवं भाषा ज्ञान,
अक्षर ज्ञान की ऊँचाई पर ले जाते,
गुरु हमारे वो कहलाते।
कलम से कलमकार बनाते
मुखवाणी एवं आशीर्वचनों से
देश धर्म की बात सिखाकर
देशहित पर चलना सदा बताते
कर्मवान बन जीवन पथ के
भूले पथिक को राह दिखाते
गुरु हमारे वो कहलाते।

गुरु की महिमा है अपरम्पार
अपनी जीवन वाणी देते जाते,
अमृत-विष का भेद बता,
ऊँच-नीच से उपर उठकर,
भेद रहित जीना सिखाते,
गुरु हमारे वो कहलाते।
सभी गुरुजनों को है सदा नमन
हमको दिया शिक्षा रुपी चमन,
जब भी होते सदा ही भरते
जीवन ज्ञान वे देते जाते,
गुरु हमारे वो कहलाते।

सुरेश कुमार गौरव
उ. म. वि. रसलपुर,
फतुहा, पटना (बिहार)

यह सौभाग्य हमारा है

तक्षशिला, नालंदा जैसी,
अविरल ज्ञान की धारा है।
जन्मभूमि यह भारत-भू है, यह
सौभाग्य हमारा है।।
ज्ञान, कर्म के दीप यहाँ पर, सदा
उजाला करते हैं,
गुरु-शिष्य की परंपरा में, दिव्य
ज्ञान यह भरते हैं,
चंद्रगुप्त-चाणक्य सरीखा, स्वर्ण
इतिहास हमारा है।
जन्मभूमि यह भारत-भू है, यह
सौभाग्य हमारा है।।
गुरु हैं पारस जिसको छूते, वह
कुंदन बन जाता है,
गुरु के हाथों तपकर-ढलकर
शिष्य निखरता जाता है,
शिष्य का हो जब
सहज समर्पण,
गुरु ने उसे निखारा है।
जन्मभूमि यह भारत-भू है, यह
सौभाग्य हमारा है।।
गुरु हैं माली, नित्य सींचते, बीज
को वृक्ष बनाते हैं,
कुंभकार बन शिष्य सुमन को,
सुगढ़ ढालते जाते हैं,
वह महका है चंदन बनकर,
जिसने गुरु को वारा है।
जन्मभूमि यह भारत-भू है, यह
सौभाग्य हमारा है।।
अनगढ़ पत्थर शिल्पकार को,
स्वयं सौंप जब देता है,
मन-मंदिर में स्थापित होकर,
रूप ईश का लेता है,
स्वयं को खोकर सब कुछ पाया,
गुरु ने पार उतारा है।
जन्मभूमि यह भारत-भू है, यह
सौभाग्य हमारा है।।

रत्ना प्रिया

उच्च माध्यमिक विद्यालय माधोपुर
चंडी ,नालंदा

सम्मान

शिक्षक हूँ, बस मान चाहिए।
थोड़ा- सा सम्मान चाहिए।।
कोरा कागज हो, या हो पानी
उसमें रंग मैं भरता हूँ।
कलाकार हैं बड़े प्रवीण हम,
छात्रों को यह बतलाता हूँ।।
फटे हुए रद्दी टुकड़े को,
जोड़- जोड़ कर सिलता हूँ।
आकार नया मैं देता हूँ
सोच बड़ा मैं रखता हूँ।।
निश्छल, निष्कपट मन में,
प्यार से अनुशासन भरता हूँ।
मिले देश को अच्छा नागरिक
यही कार्य मैं करता हूँ।।
जन-जन में मानवता का संचार।
सिखाता हूँ सबको संस्कार।।
सपने देखो साकार करो,
यही चेतना जगाता हूँ।।

पता नहीं, क्या हो गया है
शासन और प्रशासन को?
मन लगाकर करता हूँ काम।
शक की दृष्टि से देखा जाता हूँ।।
नहीं चाहिए कोई पुरस्कार
आत्म संतुष्टि तब होता है।
जब छात्र, छात्रा अपने रण में,
सफलता प्राप्त कर लेता है।।
शिक्षक हूँ बस मान चाहिए।
थोड़ा-सा सम्मान चाहिए।।

भवानंद सिंह
म. वि. मधुलता
रानीगंज, अररिया
बिहार

शिक्षक महान

जो कराए सही ग़लत
की पहचान
वही तो कहलाते हैं
शिक्षक महान।
शिक्षक ही आँखों से
चादर हटाते,
जिस से होते अभिन्न
और अज्ञान।
शिक्षक की सेवा जो
किया सदैव ही,
आगे चलकर अवश्य
बना महान।
गुरुओं का सत्कार
कभी न भूलें कोई,
इनके ही तपों से है
जीवन का उत्थान।

गुरु -शिष्य का रिश्ता है,
बहुत पवित्र,
इस रिश्ते में आकर ही
लोग बने महान।
जीवन में गुरु का होना है
बहुत ज़रूरी,
इन से होता है समस्या
का समाधान।
आचार्य चाणक्य के
शिक्षा सत्कार ने ही,
चन्द्रगुप्त मौर्य को बनाया
वीर और महान।

एम ० एस० हुसैन कैमूरी
उत्क्रमित मध्य विद्यालय
छोटका कटरा
मोहनियां कैमूर बिहार

गुरु का सानिध्य

चलते हैं गाँवों की
छाँह में,
है कलम मसिदानी
साथ में।
रहते हैं लोग जहाँ
अंधेरे में,
हर्ष वहाँ ज्ञान दीप
जलाने में।
पढ़ती है अपनी
बेटियाँ भी,
काटी है घुटन की
बेडियाँ भी,
रहते हैं तैयार गुरुजन
भी,
कर समर्पित अपना
मन भी।

चूमे गगन और पहुँचे
सरहद पार,
सफलता पाओ तुम
सब बारंबार,
आशावान देश तुम
नौनिहालों से,
मिले आशीष गुरु के
सानिध्य से।

एस. के. पूनम

प्राथमिक विद्यालय बेलदारी टोला,
फुलवारीशरीफ

शिक्षा की ज्योति

शिक्षक हैं शिक्षा के सागर,
ज्ञान के गागर हैं शिक्षक।
कुंभकार, सृजनहार और
भविष्य के निर्माता शिक्षक।
ज्ञान की दिव्य ज्योति जलाकर,
अंधकार से प्रकाश में लाते शिक्षक।
शिक्षक हैं शिक्षा के सागर,
ज्ञान के गागर हैं शिक्षक।
नवजात परिंदों को आसमान में,
उड़ना सिखाते शिक्षक।

बागों के नन्हें पौधों को सींचकर,
हरा-भरा पेड़ बनाते शिक्षक ।
शिक्षक हैं शिक्षा के सागर,
ज्ञान के गागर हैं शिक्षक।
सिंधु में गोता लगाकर,
ज्ञान का मोती चुनवाते शिक्षक।
शून्य से शिखर तक पहुँचाते,
जीवन के सच्चे मार्ग दिखाते
शिक्षक।

समर्पण भाव से लगन, कौशल,
जिज्ञासा उत्पन्न कराते शिक्षक।
सत्यनिष्ठ, कर्तव्यपरायण,
गरिमामय होते शिक्षक ।
शिक्षक हैं शिक्षा के सागर,
ज्ञान के गागर हैं शिक्षक।
ज्ञान का अलख जगाते,
अच्छे संस्कार देते शिक्षक।
निष्ठा से शिक्षा देकर,
शिक्षणकर्ता कहलाते शिक्षक।

ब्यूटी कुमारी
मध्य विद्यालय मरांची
बछवारा, बेगूसराय

गुरु माना है हम आपको

जीवन तो समंदर की लहरों में
रहता था,
और मैं कश्ती लिए किनारे
किनारे बहता था।
बस सुनता था कही मीन है तो
कही सर्प भी,
पर अपनी आँखों से कुछ भी
नही देखा था।
गुरु बिना कोई एक निशाना भी
कैसे भेद सके,
बिना नेत्र के चाहे भी तो मंजर
कैसे देख सके
आँखों पर पट्टी थी, जैसे
अंधकार की दुनिया थी,
पर गुरु आपके पास तो कोई
चमत्कार की पुड़िया थी।
चमत्कारी हो, मायावी हो कोई
महाज्ञानी इंसान भी हो,
निर्जीव को सजीव बना दे, आप
ऐसे भगवान भी हो।
जो भीतर का रूप दिखाए
आपने ऐसा दर्पण दिया,
मुझको ज्ञान नही दिया केवल,
एक नया जीवन दिया
आत्मविश्वास ऐसा भरा आपने
की, देखने वाला सोचेगा
कोई पर्वत भी नीचे आ जाए तो
कितनी देर रास्ता रोकेगा

हर बाधा को हर दुविधा को मैने
ऐसे पार किया,
जैसे हर मुश्किल ने खुद हल होने
का उपचार दिया
और रिश्ते तो कितने गिनवाऊँ,
आपने जो निभाया है,
की संगी साथी को छोड़ो माँ बाप
को भी भुलाया है
अक्सर प्यार से तो कभी गुस्से से
समझाया है।
अब उसी राह पर चलना है, जो
राह आपने दिखाया है
बहुत वक्त लगाया आपको ये गीत
समर्पित करने में,
पर वक्त तो लगना ही था उतना
फ़न अर्जित करने में
मैं एहसान भुला जाऊँ ऐसा कोई
क्षण नही,
या एहसान जता पाऊँ इतना भी
सक्षम नहीं।
पर अँगूठा क्या पूरा शरीर त्याग
कर दूँगा,
गुरु माना है हम आपको, मैं
एकलव्य से कम नहीं।

अभिनव कुमार

प्रखंड शिक्षक, रोसरा, समस्तीपुर

ज्ञान का अलख जगाते शिक्षक

बच्चों के होते, प्यारे शिक्षक,
ज्ञान का अलख, जगाते शिक्षक।
अक्षर ज्ञान, कराते शिक्षक,
अच्छा बुरा, बताते शिक्षक।
शिक्षक की महिमा अपरम्पार,
बच्चों का स्वप्न साकार कराते,

बनते इंजीनियर, डॉक्टर,
या कलाकार।
बच्चों का भविष्य बनाते शिक्षक।
माता-पिता निश्चिंत हो जाते,
शिक्षकों को दे बच्चों का भार।
डाँट भी खाते, प्यार भी पाते,
मिलता घर जैसा दुलार।

जीवन सार बताते शिक्षक ,
उनका साथ निभाते शिक्षक।
एक सभ्य समाज का निर्माण करते,
राष्ट्र निर्माण के कर्णधार हैं शिक्षक ,
जीवन का आधार हैं शिक्षक।
बच्चे उनका संसार है,
विद्यालय ही परिवार है।

दीपावर्मा

रा. उ. म. विद्यालय
मुजफ्फरपुर

हमारे शिक्षक महान

तन मन जिसने किया कुर्बान
वो कोई और नहीं, शिक्षक महान।
छात्रों की राह करते आसान,
शायद मिला उन्हें ईश्वरीय वरदान।।
सुबह की पहली किरणों के साथ,
छात्रों का टेंशन लेते अपने माथ
नित्य नए-नए ज्ञान का करते संचार,
छात्रों को सिखलाते सुंदर विचार,
कक्षा से पहले तैयार करते लेशन प्लान,
ताकि बच्चों को दे सटीक ज्ञान।
हर छात्र पर रहता उनका ध्यान,
जब दे रहे हों शिक्षा और ज्ञान।।

छात्रों के लिए उनका ये समर्पण,
अरमान भी जिनका हो अर्पण,
छात्रों की सफलता से जो हो उत्साहित,
हमेशा जिन्हें करते रहते प्रोत्साहित,
जिनका सर्वस्व जीवन छात्रों पर हो समर्पित,
उन शिक्षकों को मेरा चन्द शब्द अर्पित,
जिन्हें न रहता अपने निजी जीवन का भान,
जो अरमानों को छात्रों के लिए करते कुर्बान,
अपनी खुशी का भी न रखते ध्यान,
हर पल छात्रों का जो करते गुणगान,
वो कोई और नहीं, हमारे शिक्षक महान।
सच्चाई की जो पाठ पढ़ाते,
धैर्य, क्षमा, करुणा का भाव जगाते,
हम नौसिखिए को बाज बनाते,
नभ में उड़ना वही सिखाते,
शिष्टाचार की राह दिखाते,
मर्यादा का नित पाठ पढ़ाते,
सामाजिकता का दर्श दिखाते,
परिस्थितियों से लड़ना सिखलाते,
दूसरे की सफलता पर जो खुश हो जाते,
सच्चे शिक्षक की भूमिका बखूबी निभाते,
जिनका सर्वस्व जीवन छात्रों के लिए अर्पण,
उनके लिए मेरा कोटि-कोटि वंदन।
जिनके कार्यों से जग में मिलता मान और सम्मान,
वो कोई और नहीं, हमारे शिक्षक महान।।
शिक्षक दिवस पर ही नहीं,
हर पल करें वंदन,
चलो करें मिलकर उनका
वंदन अभिनंदन।।

विवेक कुमार
भोला सिंह उच्च माध्यमिक विद्यालय
पुरुषोत्तमपुर
कुढ़नी, मुजफ्फरपुर

करें इन्हें शत् शत् प्रणाम

शिक्षक के प्रति एक अहसास,
शिक्षक दिवस को बनाएँ खास।
गुरु बिनु ज्ञान न उपजै ,
गुरु बिनु मिलै न भेव
गुरु बिनु संशय न मिटै,
जय जय जय गुरुदेव।
05 सितंबर दिन अति पावन
और यह दिन बड़ा महान।
आज हीं जन्म लिए श्रीकृष्णन
उनके लिए गाते जय गान।।
नाम है इनका डॉ॰सर्वपल्ली
राधाकृष्णन
करते थे सबका सम्मान।
न रखे किसी से द्वेष-भाव,
न था उनके मन में अभिमान।।
तमिलनाडु के चित्तूर जिले
गाँव इनका तिरूतनी था,
05 सितंबर सन् 1888 को
तमिल ब्राह्मण परिवार में
जन्म हुआ,
इनके पिता सर्वपल्ली वीरास्वामी
माता सितम्मा नाम महान।

पहले बने आक्सफोर्ड
विश्वविद्यालय के प्रधान,
फिर बने आंध्र विश्वविद्यालय
के कुलपति पद से महान।
उपराष्ट्रपति से राष्ट्रपति बन गये,
किये कठिन- से- कठिन वो
काम।।
देश हेतु काम किए तन -मन से,
जगत में फैला इनका नाम।
ऐसा देश-भक्त नहीं होगा
आज के युग का कोई इंसान।।
नीतू रानी की है प्रभु से विनती,
देश को देना प्रभु ऐसी हीं संतान।।
आओ सब मिल शीश झुकाकर,
करें इन्हें शत् शत् बार प्रणाम।।

नीतू रानी

मध्य वि॰ सुरीगाँव
प्रखंड -बायसी
जिला – पूर्णियाँ, बिहार

मेरी अभिलाषा

अभिलाषा अहर्निश है मेरी
संताप हरने की।
जीवन में सत्य सुन्दर और
अतुलित प्राण भरने की।
समर्पित इस धरा को तम से
आजाद करने की।
अभिलाषा अहर्निश है मेरी
संताप हरने की।।
समर्पित मैं रहूँ निशिदिन मनुज
संताप हरने को।
नहीं सोचूँ कहीं देवों के सर के
ताज बनने की।।
अभिलाषा नहीं पिय के गले का
हार बनने की।
अभिलाषा अहर्निश है मेरी
संताप हरने की।।
पल-पल और घट-घट में यदि
भगवान धरती पर।
उन्हें भी स्वयं में धारण किये
निष्णात चलने की।।

किसी असहाय निर्बल में
सहज ही प्राण भरने की।
अभिलाषा अहर्निश है
मेरी संताप हरने की।।
नयनों में तो सुरभित रंग
के अनुराग भरने की।
पावन मन में निर्मल और
चिरंतन आस भरने की।।
मैं किसी के जख्म को
सहला सकूँ वो आस
बनने की।
अभिलाषा अहर्निश है
मेरी संताप हरने की।।

डॉ स्नेहलता द्विवेदी "आर्या"
उत्क्रमित मध्य विद्यालय शरीफगंज , कटिहार

आसमान पर छाओगे

सत्य मार्ग पर चलकर देखो,
अद्भुत सुख को पाओगे।
कभी नहीं तुम विचलित होगे,
और नहीं पछताओगे।।
जलने वाले वहीं रहेंगे,
तुम आगे बढ़ जाओगे।
जल-जल कर वो राख बनेंगे,
तुम शुचिता को पाओगे।।

कर लो पावन अंतर्मन को,
अभयदान को पाओगे।
विषम परिस्थिति में भी प्यारे,
नहीं कभी घबराओगे।।
चित्त करोगे वश में यदि तुम,
परम् तत्त्व को पाओगे।
लेकर हाथ विजय प्रतीक तुम,
आसमान पर छाओगे।।

कुमकुम कुमारी "काव्याकृति"
मध्य विद्यालय बाँक, जमालपुर, मुंगेर

मनहरण घनाक्षरी

भाद्रपद शुक्लपक्ष,
धन्य हे सुलक्ष्य लक्ष,
वक्रतुंड महाकाय,
चरण पखारते।
कोमल- कोमल दूर्वा,
मोदकम मोतीचूर्वा,
मूषक वाहन बीच,
लाल ही स्वीकारते।
लाल वस्त्र लाल फूल,
रक्त चंदन कबूल,
नारियल संग हम,
प्रभु को पुकारते।
पुष्प धूप दीप गंध,
अक्षत नैवेद्य संग,
गंगाजल लिए हम,
मंत्र भी उच्चारते।

रामपाल प्रसाद सिंह 'अनजान'
प्रधानाध्यापक मध्य विद्यालय दरबे भदौर
पंडारक, पटना

किसने रोका है

अंधेरा घोर घना है, एक बत्ती जलाने से
किसने रोका है?
प्रदूषण है यदि बहुत अधिक, एक पेड़ लगाने
से किसने रोका है?
निराशा है चारों ओर, उर में उत्साह लाने से
किसने रोका है?
समस्या है ही अधिक, दोष छोड़, हल ढूँढ़ने
से किसने रोका है?
दुर्बलता है अधिक, बल के चिंतन से किसने
रोका है?
चरित्र रहे उज्ज्वल, निज आदर्श पर चलने से
किसने रोका है?
वैर -भाव है बहुत, प्रेम-क्षमा करने से किसने
रोका है?
सिस्टम सोया है गर, आपको जगने से
किसने रोका है?
रुके हों कदम सभी के, आपको पग बढ़ाने
से किसने रोका है ?
असफल हो रहे हैं बार-बार, एक बार और
प्रयत्न से किसने रोका है?

गिरीन्द्र मोहन झा 'शिक्षक'

भागीरथ उच्च विद्यालय चैनपुर- पड़री, सहरसा, बिहार

मंगलकर्त्ता गणेश

हे गजानन, विघ्नविनाशक,
आप हैं मंगलकर्त्ता।
हे विनायक, शुभ बुद्धिदायक,
कष्ट हरो दु:खहर्त्ता।।
आए हैं प्रभु, शरण तिहारी,
जीवन मंगल कर दो,
दुर्बुद्धि, छल का भाव, मिटा
दो, मन में शुचिता भर दो,
तेरा है यह रूप मनोहर, हम
जाएँ बलिहारी,
तेरा आशीर्वचन फले जो,
औषध-सम हितकारी।
आशाओं के दीप जला दो,
इस जग के कर्त्ता-धर्त्ता |
हे गजानन, विघ्नविनाशक,
आप हैं मंगलकर्त्ता।

ऋद्धि- सिद्धि हैं देने वाले, व
शुभ-लाभ के स्वामी,
बुद्धि-विवेक की दृष्टि सदा दो,
गजाधर अंतर्यामी,
ध्येय दृष्टि से न हो ओझल, पथ
पर बढ़ते जाएँ,
मंजिल की बस धुन हो मन में, हर
पल चलते जाएँ।
आपके दर्शन, पूजन मन में, दिव्य
ज्ञान है भरता।
हे गजानन, विघ्नविनाशक, आप
हैं मंगलकर्त्ता।

रत्ना प्रिया

उच्च माध्यमिक विद्यालय माधोपुर
चंडी, नालंदा

मैं नारी हूँ

अबला नहीं, मैं नारी हूँ।
करुणामयी , कल्याणी हूँ।।
लज्जा सदैव सिरमौर रहा,
अंतस में है कुछ खौल रहा ,
मैं दबी राख, चिंगारी हूँ।
अबला नहीं, मैं नारी हूँ।
करुणामयी , कल्याणी हूँ।।
दीन कातर पुकार हूँ मैं,
ममता की कोमल छाँव हूँ मैं,
श्रद्धा विश्वास का भाव हूँ मैं,
ममतामयी सृष्टि सारी हूँ।
अबला नहीं, मैं नारी हूँ।
करुणामयी , कल्याणी हूँ।।

रागों में मेघ मल्हार हूँ मै ,
वीणा की झंकार हूँ मैं ,
ऋतु बसंत-बहार हूँ मैं,
प्रेरणा, पूज्य, प्रतिकारी हूँ।
अबला नहीं, मैं नारी हूँ।
करुणामयी , कल्याणी हूँ।।
साहस का संचार हूँ मैं,
हर आँगन का श्रृंगार हूँ मैं,
स्नेह ,शौर्य, उद्गार हूँ मैं,
मैं शत्रुंजयी भयकारी हूँ।
अबला नहीं, मैं नारी हूँ।
करुणामयी, कल्याणी हूँ।।

प्रथम नागरिक पहचान हूँ मैं,
राजनीति की शान हूँ मैं,
विकसित भारत की आस हूँ मैं,
स्वावलंबी स्वाभिमानी हूँ,
अबला नहीं, मैं नारी हूँ।
करुणामयी , कल्याणी हूँ।।
अंतरिक्ष की पहचान हूँ मैं,
क्रीड़ा में, शिरोधार्य हूँ मैं,
प्रगति की सूत्रधार हूँ मैं,
चिकित्सा की, परिचारी हूँ।
अबला नहीं, मैं नारी हूँ।
करुणामयी, कल्याणी हूँ।।

मत छेड़ो, मेरा मान करो,
तुम शक्ति का, सम्मान करो,
वसुधा पर, उपकार करो,
मैं समता की, अधिकारी हूँ।
अबला नहीं, मैं नारी हूँ।
करुणामयी, कल्याणी हूँ।।

प्रियंका कुमारी

उ. म. वि. बुढ़ी
कुचायकोट, गोपालगंज, बिहार

हिंदी राष्ट्रभाषा

हिंदी मेरी जुबान
हिंदी मेरी पहचान,
कभी भावनाओं के ज्वार थामे,
कभी जज्बातों को दे पहचान।
हिंदी मेरी जुबान।
कल्पनाओं के जो महल बनाई,
दर्द की तीव्रता जब मन में समाई,
खुशी की खिलखिलाहट
जब मेरे चेहरे पर आई।
हिंदी मेरी जुबान।
उठते गिरते हौसलों संग,
हिम्मत देख जब हुए दंग,
जिंदगी दिखलाए अपने रंग।
हिंदी मेरी जुबान।
नहीं कोई सीमा में बाँधे,
नहीं कोई कमियों से रोके,
टूटी-फूटी या सही गलत जो भी हो,
हिंदी मेरी जुबान।
हिंदी है हिन्द की भाषा,
यह है हम सबकी आशा,
सहजता से बोले और समझे
दूर हो इससे निराशा।
हिंदी मेरी जुबान।
रस, छंद, अलंकार से अलंकृत
व्याकरण से है ये परिष्कृत
शब्दों का है इसका देखो
विपुल भंडार
हिंदी मेरी जुबान।

रूचिका
राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय तेनुआ,
गुठनी, सीवान, बिहार

हिंदी दिवस

हिंदी दिवस मनाएँ ऐसे,
जिसमें भाव प्रवणता हो।
दिल ही नहीं दिमागों में भी ,
कार्य करने की क्षमता हो।।
हिंदी हमारी मातृभाषा है,
इसको सदा सशक्त करें।
यही तो जनवाणी है ,
इसको सदा प्रशस्त करें।
मानवता की बात सदा ,
इसमें ही गाई जाती है।
दशमलव की परिभाषा भी,
इसमें ही समझायी जाती है।
संस्कार भी हिंदी से आती,

इसमें अपसंस्कृति का नाम नहीं।
यह इतनी सहज सरल भाषा है,
जिसमें तनिक विराम नहीं।
विरासत की गरिमा है इसमें,
मर्यादा की अभिव्यक्ति है।
विश्वास सदा है इसके प्रति ,
इस भाषा की बड़ी शक्ति है।
पचहत्तर वर्ष पूरे हुए ,
राजभाषा के रूप में।
जनमानस में यह रची-बसी ,
स्वर्णिम संपदा स्वरूप में।
जीवन को आलोकित है करती ,
इसमें ही जीवन का सार है।
कर्मठता पैदा करती यह ,
इसमें गुणों की भरमार है।।

समझें और समझाएँ इसमें ,
इस भाषा का कोई जोड़ नहीं।
व्यष्टि ही नहीं समष्टि में भी,
इस भाषा का कोई तोड़ नहीं।
अपनी भाषा, अपनी लिपि को,
सदा सशक्त बनाएँ हम।
इसमें ही है प्रभुता हमारी,
इससे सदा जुड़ जाएँ हम।।
यह अपनेपन की भाषा है,

इससे सदा सहज सरोकार है।
यह भाषा अमृत वृष्टि करती,
यह इसका सदा उपकार है।।
पाएँ हम इससे विद्या ,
सदा पाएँ संस्कार इससे।
मार्ग सदा निष्कंटक हो ,
जीवन सुरभित हो जिससे।।
यह तरुणाई की वेला है ,
इस भाषा का है शिखर प्रखर।
जीवन में उजियारा लाने को,
है धरा बड़ी उर्वर उर्वर।।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर विद्यालय बैंगरा
प्रखंड- बंदरा, जिला- मुजफ्फरपुर

हिन्दी

हिन्दी को नित्य पढ़ने की, पढ़ाने की
अभिलाषा है,
गर्व है हम भारतीयों को, यह भारत की
भाषा है।
उड़ें गगन में दूर तलक, पर जमीं हमेशा
याद रहे,
जिस धरती पर जन्म लिया, वह
मातृभूमि आबाद रहे,
हिन्दी जलधि के अमृत को, नित्य पीने
की पिपासा है।
गर्व है हम भारतीयों को, यह भारत की
भाषा है।
विश्व की सभी भाषाओं की, माँ संस्कृत
कहाती है,
हिन्दी संस्कृत के आँचल की पुत्री मानी
जाती है,
समृद्ध लिपि देवनागरी की सहज, सरल
परिभाषा है।
गर्व है हम भारतीयों को, यह भारत की
भाषा है।
ज्ञान से बढ़कर इस जग में श्रेष्ठ नहीं
दूजा धन है,
उस व्यक्ति की शक्ति सीमित नहीं,
परम जिज्ञासु जो मन है,
उत्सुक मन हर पल खुश रहता,
होती नहीं निराशा है।
गर्व है हम भारतीयों को, यह भारत
की भाषा है।
हम हिन्दी हैं और वतन हैं, यह
कवियों की वाणी है,
हिन्दी, हिन्दू हिन्दोस्तान, की
पहचान पुरानी है,
हिन्दी हो राष्ट्र की भाषा , नवपीढ़ी से
आशा है।
गर्व है हम भारतीयों को, यह भारत
की भाषा है।
भारत की बिन्दी है यह बापू की
राजदुलारी है,
घर-घर बोली जानेवाली, हर भाषा
से न्यारी है,
सुसभ्य संस्कृति को देती, सुंदर,
सरल मीमांसा है।
गर्व है हम भारतीयों को, यह भारत
की भाषा है।

रत्ना प्रिया
उच्च माध्यमिक विद्यालय माधोपुर
चंडी, नालंदा

हिंदी की बिंदी

अक्षर से अक्षर
सजाऊँगी मैं,
हिंदी की बिंदी
लगाऊँगी मैं।
हिंदी की महत्ता
बताऊँगी मैं ,
हिंदी की बिंदी
लगाऊँगी मैं।
तत्सम तद्भव की माला
बनाऊँगी मैं,
हिंदी की बिंदी
लगाऊँगी मैं।

देशी विदेशी शब्दों को
अपनाऊँगी मैं,
हिंदी की बिंदी
लगाऊँगी मैं।
स्वरों की सरिता
बहाऊँगी मैं,
हिंदी की बिंदी
लगाऊँगी मैं।

शब्दों से शास्त्र
बनाऊँगी मैं,
हिंदी की बिंदी
लगाऊँगी मैं।

वाणी की शोभा
बढ़ाऊँगी मैं,
हिंदी की बिंदी
लगाऊँगी मैं।
देश के गौरव को
पाऊँगी मैं,
हिंदी की बिंदी
लगाऊँगी मैं।
अक्षर से अक्षर
सजाऊँगी मैं,
हिंदी की बिंदी
लगाऊँगी मैं।

प्रियंका कुमारी

उ. म. वि. बुढ़ी
कुचायकोट, गोपालगंज, बिहार

हिंदी

भारतवासियों के भावों की
अभिव्यक्ति हिंदी।
जन- जन, गण- गण, मन-मन
में पुष्पित पल्लवित हिंदी।।
सुजलाम सुफलाम्
मलयजशीतलाम्,
शस्यश्यामलाम् मातरम् हिंदी।
अलंकारों में कंगन सी खन-
खन खनकती हमारी हिंदी।।
बैलों के गले में लटकी घंटी की
टन-टन टंकार है हिंदी।
पतित पावनी गंगा, यमुना,
भगीरथ-सी कल- कल छल-
छल राग सुनाती हिंदी।।
वीणा, सितार, संतूर-सी मीठी
तान सुनाती हमारी हिंदी।
जन-जन के हृदय की प्रियम्वदा
है हमारी हिंदी।।
जन-जन को एकता के सूत्र में
पिरोती हमारी हिंदी।

निज गौरव गान की आभा
दिखलाती हमारी हिंदी।।
राष्ट्र का विजय तिलक लगाती
बिंदी रूपी हमारी हिंदी,
यूँ ही नहीं,
संसार की सर्वश्रेष्ठ पंच भाषाओं
में शामिल होती हमारी हिंदी।
सर्वभाषाओं में सर्वश्रेष्ठ हिंदी।।
सर्वभाषाओं की शिरोमणि हिंदी।
भारतवासियों के भावों की
अभिव्यक्ति हिंदी।।

अवनीश कुमार
व्याख्याता (बिहार शिक्षा सेवा)
प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय विष्णुपुर,
बेगुसराय

हिंदी का मान बढ़ाएँगे

जो भाषा माँ से सीखी जाती,
जग में सबका मान बढ़ाती,
एकता का प्रतीक बन जाती,
उसकी गाथा जन-जन को बतलाएँगे,
उस हिंदी का मान बढ़ाएँगे।
हिंदी की बिंदी जिसके भाल,
प्रकृति भी बिना पूछें, न चलती चाल,
संस्कृति की जिससे होती पहचान,
उसकी गाथा जन-जन को बतलाएँगे,
उस हिंदी का मान बढ़ाएँगे।।
हिंदी ही है सुर संगीत और तान,
इसीलिए मेरा देश कहलाता महान,

सरल सौम्य स्वभाव है जिनका,
उसकी गाथा जन-जन को बतलाएँगे,
उस हिंदी का मान बढ़ाएँगे।।
जो है देश की आन- बान और शान,
जिससे बढ़ता है देश का मान,
जिस भाषा पर हम सभी को है नाज,
उसकी गाथा जन-जन को बतलाएँगे,
उस हिंदी का मान बढ़ाएँगे।।

अक्षर से अक्षर का ज्ञान कराती,
उच्चारण में जिसके स्पष्टता है होती,
जो प्रभावमयी और गतिशील है होती,
उसकी गाथा जन-जन को बतलाएँगे,
उस हिंदी का मान बढ़ाएँगे।।
हिंदी हिंदुस्तान की पहचान है,
इस हिंदी के बिना जीवन वीरान है,
जिससे ही मिला जग में सम्मान है,
उसे नित फूलों से महकाएँगे।
उस हिंदी का मान बढ़ाएँगे।।

विवेक कुमार

भोला सिंह उच्च माध्यमिक विद्यालय
पुरुषोत्तमपुर, कुढ़नी, मुजफ्फरपुर

भारत की गौरवगाथा हिंदी

हमारी राजभाषा है हिंदी,
भारत की गौरवगाथा है हिंदी।
जन -जन की भाषा है हिंदी,
भारत की आशा है हिंदी।
हिन्द देश की आन है हिंदी,
मान, सम्मान, अभिमान है हिंदी।
सीख लें चाहे कितनी भाषा,
हम सबकी पहचान है हिंदी।
सुर, संगीत और तान है हिंदी,
परम्परा की पहचान है हिंदी।

बोले चाहें कितनी भाषा,
हम सबों की तो शान है हिंदी।
सरल, सहज भाषा है हिंदी,
भारत की मातृभाषा है हिंदी।
सरल शब्दों में कहा जाए तो,
जीवन की परिभाषा है हिंदी।

गुडिया कुमारी
मध्य विद्यालय बाँक, जमालपुर, मुंगेर

सभ्यता की पहचान है हिन्दी

देवभाषा से निकली
हमारा स्वाभिमान व
ईमान है हिन्दी,
शस्य-श्यामल धरा का
शृंगार है हिन्दी।
मर्म से भरी भाषा यह
सुन्दर जीवन की
अभिलाषा यह,
मात्र समृद्ध शब्दों का
सूत्रधार नहीं,
मानव जीवन का
सुदृढ आधार है हिन्दी।

उन्नत संस्कृति का
पर्याय है यह,
जन-जन का न्याय है यह,
मात्र सभ्य होने का
प्रमाण नहीं,
सभ्यता की पहचान है हिन्दी।
इस सुन्दर जगत को,
देवों से मिला
खूबसूरत-सा वरदान है हिन्दी,
नस-नस में दौड़ रहा,
जीता-जागता सम्मान है
हिन्दी।

सुशील कुमार
उच्च माध्यमिक विद्यालय,
कमरौली, शिवहर

भारत माँ का गहना हिन्दी

हिन्दी के बिन्दी को मस्तक पर
नित सजा चमकाएँगे,
सर आँखों पे बिठाएँगे।
यह भारत माँ का, गहना है।
हिन्दी मेरा ईमान है,
हिन्दी मेरी पहचान है।।
हिन्दी हूँ मैं वतन भी मेरा,
प्यारा हिन्दुस्तान है।।
बढ़े चलो, हिन्दी की डगर,
हो अकेले फिर भी मगर।
मार्ग की काँटे भी देखना,
फूल बन जाएँगे पथ पर।।

हिन्दी से हिन्दुस्तान है,
तभी तो यह देश महान है।
निज भाषा की उन्नति के लिए
अपना सब कुछ कुर्बान है।
एक दिन ऐसा भी आएगा,
हिन्दी परचम लहराएगा।
इस राष्ट्र भाषा का हर ज्ञाता,
भारतवासी कहलाएगा।
निज भाषा का ज्ञान ही,
उन्नति का आधार है।

बिना निज भाषा ज्ञान के,
नहीं होता सदव्यवहार है।
आओ हम हिन्दी अपनाएँ,
गैरों को परिचय कराएँ।
हिन्दी वैज्ञानिक भाषा है,
यही बात सबको समझाएँ।।
हिन्दी ही हिन्द का नारा है।
प्रवाहित हिन्दी धारा है।
हम हिन्दी ही अपनाएँगे,
इसको ऊँचा ले जाएँगे।
हिन्दी भारत की भाषा है।
हम दुनियाँ को दिखलाएँगे।।

हर्ष नारायण दास
मध्य विद्यालय घीवहा, फारबिसगंज।
जिला- अररिया

भारत की पहचान हिंदी

भाषा की जननी हिंदी
हिंद की भाषा है हिंदी,
भाषा की परिभाषा
हिंदी।
अपभ्रंश की उत्पत्ति
हिंदी,
भारत का भाल सजाता
हिंदी।
आन बान और शान
हिंदी,
भारत की पहचान हिंदी।
संचार शिक्षा का अवसर
हिंदी,
भाषा की परिभाषा
हिंदी।
भारत की अभिलाषा
हिंदी।
विश्व की प्रमुख भाषा
हिंदी।
कवि की कविता हिंदी,
गीतों का उद्गाता हिंदी ।

विद्वानों की वाणी
हिंदी
भावनाओं का उद्गार
हिंदी।
सबको गले लगाती
हिंदी,
जन-जन की भाषा
हिंदी।
सुंदर सरल भाषा
हिंदी,
सबके मन को भाता
हिंदी।
संस्कृत की आत्मजा
हिंदी,
साहित्य की गरिमा
हिंदी।
भाषा की जननी हिंदी,
हिंद की भाषा है
हिंदी।

ब्यूटी कुमारी
मध्य विद्यालय मराँची
बछवाड़ा, बेगूसराय

अद्भुत है हिंदी की भाषा

अद्भुत है हिन्दी की भाषा,
राष्ट्र शक्ति प्रेरित अभिलाषा,
जो लिखें वो बोलें हम,
हृदय भाव को तौलें हम,
दूसरी भाषा के शब्दों को,
विदेशज रूप रस घोलें हम,
भिन्नता नहीं इसमें जरा-सी,
अद्भुत है हिन्दी की भाषा,
राष्ट्र शक्ति प्रेरित अभिलाषा।
बहुतायत में बोली जाती,
विदेशों में भी परचम फैलाती,
देववाणी से जन्म यह लेकर,
देव चरित्र भी यह सिखाती,

देती यह हर मन को दिलासा।
अद्भुत है हिन्दी की भाषा,
राष्ट्र शक्ति प्रेरित अभिलाषा।
ग्यारह स्वर व्यंजन तैंतीस,
इनसे बनती है वर्णमाला,
लेकिन संकेत हैं कुल सावन,
जो विशिष्ट इसे बना डाला,
मात्रा व बारह खड़ी है खासा।
अद्भुत है हिन्दी की भाषा,
राष्ट्र शक्ति प्रेरित अभिलाषा।
निराले एकार्थक अनेकार्थक ,
विशिष्ट बनाती इसे पर्याय,
बदलते भाव चिह्न विविध,
गद्य पद्य की अनेक कलाएँ,
सिंचित करती मन जैसे बर्षा।
अद्भुत है हिन्दी की भाषा,
राष्ट्र शक्ति प्रेरित अभिलाषा।
हिन्दी खुद शब्द फारसी की,
चौदह सितंबर जयंती मनाया,
उनचास में संविधान अपनाया,
तीन तैंतालीस में जगह पाया,
बनी एक अधिकारिक भाषा।
अद्भुत है हिन्दी की भाषा,
राष्ट्र शक्ति प्रेरित अभिलाषा।
आज तिरस्कृत बनी बेचारी,
आंग्ल प्रेम की है यह मारी,
आकर्षण प्रेम संस्कृत नारी,
दो लिंग दो वचनों पर वारी,
‘पाठक ‘ देते संयम हैं दिलासा।

राम किशोर पाठक

प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया
इंगलिश पालीगंज, पटना

हिन्दी

सहज सृजन की कुंजी,
भावगम्य मनमोहक पूंजी।
सुरम्य गीत संगीत सुधारस तृप्ति,
कथा पटकथा चलचित्र समग्र सृष्टि।
हिंदी!
स्वर व्यंजन वर्ण,
शब्द विन्यास बहुरंग।
सरल सुलेख्य सुपाठ्य,
भीतर बाहर छद्मरहित एकरंग।
हिंदी!

विशाल, क्रमशः बढ़ती,
बोली भाषा समाहित करती।
नये शब्द , नव विहान गढ़ती,
विश्व का परिधान धारण करती।
हिंदी!
दिल में रची-बसी,
रोम-रोम को पुलकित करती,
बेहद खास अनन्य रसधार बहाती,
माँ के दुलार की बोली में मिठास घोलती।
हिंदी!

घर-बाजार, खेत-खलिहान,
विविध रूप धारण करती।
सरकार करती एलान,
राजभाषा हिंदी है परेशान।
हिंदी!
अपने घर में उपेक्षा से हलकान,
अंग्रेजी प्रशासन में विराजमान।
विधि नियम सर्वत्र ढूँढती सम्मान,
कब तक मनाएँगे हिंदी दिवस श्रीमान्।

डॉ स्नेहलता द्विवेदी आर्या

उत्क्रमित कन्या मध्य विद्यालय
शरीफगंज, कटिहार, बिहार

हिंदी हिन्दुस्तान की

हिंदी हिंदुस्तान की
गौरव राष्ट्र के आत्मसम्मान की,
सुरभित वाटिका हूँ मैं
भाषारूपी बागान की,
मैं हिंदी हिंदुस्तान की।
राजभाषा का दर्जा
है मेरी आन और शान भी,
है मेरा हर ओर प्रसार
मुहताज़ नहीं मैं किसी पहचान की
मैं हिंदी हिंदुस्तान की।
प्रेम की सरिता ले बही
मैं हर प्रांत की सीमा में,
हर लफ़्ज़ में मेरी वाणी
मैं हर शब्दों की महिमा में।
साँझ की हूँ सिंदूरी लाली
सुबह की उदित उषा हूँ मैं,
अरुणोदय-सा दीप्तिमान
है लावण्यमय कीर्तिमान,
मैं ही आशाओं की नव विहान भी,
मैं हिंदी हिंदुस्तान की।

संजय कुमार

इंटरस्तरीय गणपत सिंह उच्च विद्यालय, कहलगाँव
भागलपुर, बिहार

संस्कृत की संवाहिका हिंदी

दूसरों का अवश्य हम गुणगान करेंगे,
पर सर्वप्रथम खुद का हम जयगान करेंगे।
दूसरी भाषा का भी सम्मान करेंगे,
पर हिन्दी को सर्वप्रथम प्रणाम करेंगे।
क्योंकि हिन्दी ही हमारी मातृभाषा है,
यही तो हमारे देश की राजभाषा है।
इसका सदैव ही हम सम्मान करेंगे,
भारतीय होने पर अभिमान करेंगे।
हिन्दी हमारी संस्कृति की संवाहक है,
जीवन मूल्यों की यही तो परिचायक है।
इसने हमें हँसना-बोलना सिखाया है,
जीवन जीने की राह हमें दिखाया है।
हिन्दी हम भारतीयों की पहचान है,
भाषा में इसका महत्वपूर्ण स्थान है।
इसके प्रसार में हम योगदान करेंगे,
सदा ही इसका हम गौरवगान करेंगे।
भारतीय होने का फर्ज़ हम निभाएँगे,
राजभाषा से राष्ट्रभाषा इसे बनाएँगे।
विश्व में सर्वोच्च स्थान इसे दिलाएँगे,
भारत को फिर से विश्वगुरु बनाएँगे।।

कुमकुम कुमारी "काव्याकृति"
मध्य विद्यालय बाँक, जमालपुर, मुंगेर

हिंदी अपनी धरोहर

गूँज रही हिंदी जग में
हो रहा जय जयकार।
देखे थे जो स्वप्न हमने,
धीरे-धीरे हो रहा
साकार।
कवि की सुंदर वाणी
हिंदी,
निकाले मन के सारे
विचार।।
तुलसी-कबीर-रसखान
गुणगान करे खूब
मल्हार।।
समर्पित स्वभाषा-प्रेम
में,
कैद हुआ समर्पित
कविराय।
शब्दों को सजाए और
सुशोभित करे
अलंकार।।

ताज-जैसा है
सुशोभित,
हिंदी है विरासत
और धरोहर,
इसलिए कीजिए
सदा
हिंदी की जय
जयकार।।

मधु कुमारी

उत्क्रमित मध्य विद्यालय
भदौरिया, कटिहार

हिंदी हमारी धड़कन है

हिन्दी है पहचान हमारी
यही हमारी धड़कन है।
हिन्दी में ही मैं पला – बढ़ा
इसी को सबकुछ अर्पण है।।
कार्यालय या सचिवालय हो,
हिन्दी में ही , उसके सेहन हैं।
कर्मचारी या अधिकारी हों
सभी तो इसके ही रहजन हैं।।
हिन्दी देती है, साथ हमारा
इसी से सब – कुछ अर्जन है।

हिन्दी है भाषाओं का उद्गम,
फिर इससे कैसी अनबन है।।
करके हिन्दी की ही दुर्दशा
अंग्रेजी का हो रहा चलन है।
देखकर हिन्दी की, ये दशा
दिल में भी हो रहा चुभन है।।

एम० एस० हुसैन
"कैमूरी"

उत्क्रमित मध्य विद्यालय
छोटका कटरा
मोहनियां, कैमूर, बिहार

हिंदी दिवस

हिंदी दिवस आया आज है,
सब भाषा पर इसका राज है।
मातृभाषा कहलाती है,
देश का मान बढाती है।
अपनी बोली, अपनी भाषा,
लगती बड़ी सुहानी है।
विदेशी भाषा भी सीखें,
पर हिंदी नहीं भुलानी है।
जन-जन को जोड़ती यह भाषा,
हम सबको अपनानी है।

प्राचीन साहित्य की जान है हिंदी,
भारत देश की शान है हिन्दी,
संस्कृति की पहचान है हिन्दी।
सरल भाषा कहलाती है,
पूरे देश में बोली जाती है।
इसका मान न कम हो पाए,
इसका महत्त्व बतलाएँगे,
हिन्दी को न भुलाएँगे ,
यह दिवस हर साल मनाएँगे।।

दीपा वर्मा

रा. उ. म. विद्यालय
मुजफ्फरपुर

प्यारी भाषा हिंदी

हिंदी हैं हम वतन हैं ,
यह हिंदोस्ता हमारा।
यह भाषा बहुत सरल है,
यह सौभाग्य है हमारा।।
हिंदी जितनी सहज है,
उतनी न कोई भाषा।
विश्व रंगमंच पर ये दमके,
है हर पल की अभिलाषा।।
यह हर भावों में बसी है,
लगती है सबको प्यारी।
इसकी लिपि है देवनागरी,
इसके शब्द सबसे न्यारी।।
इसके हर शब्द दिल को छू ले,
ऐसी भाषा है हमारी।
यह जीवन सुधन्य कर दे,
यही शुभकामना हमारी।।
हमारी पहचान है इसी से,
यह जान से भी प्यारी।
यह हर देश में नित गूँजे,
नित अभिलाषा है हमारी।।

हम जितना मान करेंगे,
उतना सम्मान है हमारा।
यह हर दिल में बसी है,
यही प्यार है हमारा।।
यह दिलों को जोड़ती है,
दिल में प्यार घोलती है।
दिल में जितना इसे बसाएँ,
यह दिल के तार जोड़ती है।।
यह जीवन नई है गढ़ती,
नित संस्कृति में पलती।
भाषा की सिरमौर है यह ,
जन-जन के मन में बसती।।
इसके हर अक्षर में वजन है,
हर शब्द मन को भाए।
सभी इसके धुन में मगन हैं,
इसमें ही गीत गाए।।
इसकी बोली है ऐसा अमृत,
सीधे दिल को जोड़ती है।
यह भाषा इतनी कोमल,
न कभी विश्वास तोड़ती है।।

यह भाषा सहज सरल है,
मन की भी आभा खोले।
गर लिख ले कोई दिल से,
तो दिल के भी तार बोले।।
इसमें सृजन की है शक्ति,
यह मधु बार-बार घोले।
इसमें है प्रभु की भक्ति ,
नित श्रद्धा का द्वार खोले।।
यह केवल उत्तर की नहीं है,
दक्षिण में भी द्वार खोले।
यह केवल पूरब की नहीं है ,
पश्चिम में भी मिसरी घोले।।
है हिंदी सबको प्यारी,
यह गौरव है जन- जन की।
यह नित प्रेम को जगाए,
यह तकदीर इस चमन की।।
है भाषा सहज सुकोमल,
यह मन को भी वश में कर ले।
यह जीवन की सरित प्रवाह है,
जीवन को भी धन्य कर दे।।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर विद्यालय बैंगरा
प्रखंड- बंदरा, जिला-मुजफ्फरपुर

भारत की पूर्ण पहचान हिंदी

हिन्दी बनी मातृभाषा, तब भाषा की जननी थी।
इस समृद्ध भाषा ने देश को एक नई पहचान दी।।
चहुँ ओर पहुँचकर यह जन-जन की पुकार बनी।
साहित्यकार, कवियों और नायकों की ललकार बनी।।
हिन्दी आज निशब्द है अपनी दुर्दशा को देखकर।
कभी भाषा पोषकों ने मान बढ़ाया इन्हें परखकर।।

पढ़ें, बोलें और सीखें फिर गर्व करें हिन्दी भाषा का।
इसने ही दिलाई भारत की पूर्ण पहचान परिभाषा का।।
राज-काज की भाषा बन जन-जन तक पहुँची हिन्दी।
सुनने, बोलने, पढ़ने, सीखने मन तक पहुँची हिन्दी।।
अंग्रेजियत हुई जब हिन्दी पर हावी, हुई तब अपमानित।
स्वतंत्र भारत में जन-जन के मुख से हुई फिर सम्मानित।।

सुरेश कुमार गौरव

उ. म. वि. रसलपुर, फतुहा, पटना

दोहावली

हिंदी अमरतरंगिनी, जन-जन की है आस।
सच्चे उर जो मानते, रहती उनके पास।।
हिंदी भाषा है मधुर, देती सौम्य मिठास।
शब्द-शब्द से प्रीति का, छलक रहा उल्लास।।
जन-जन की भाषा सुघर, सरस अलंकृत भाव।
शब्द व्यंजना है अमित, करिए अंतस् चाव।।
बिंदी है यह हिंद की, हो न कभी अपमान।
जैसे शोभित भाल पर, वैसे रखिए ध्यान।।
रोटी खाएँ हिंद की, बसे हिंद का भाव।
निज भाषा का मान हो, हिंदी से हो चाव।।

हिंदी के नित मंच पर,कहें न दूजा बोल।
अनुपम मधुरिम भाव है, कभी न इसको तोल।।
हो हिंदी का देश में, सम्यक सही प्रचार।
तभी गर्व से कह सकूँ, स्वप्न हुआ साकार।।
निज भाषा से नेह रख, अपनी संस्कृति जान।
हिंदी से ही हिंद है, सदा बढ़ाएँ मान।।

देव कांत मिश्र 'दिव्य'
मध्य विद्यालय धवलपुरा,
सुलतानगंज, भागलपुर, बिहार

विधाता छंद

सहज हिंदी सरल भाषा,
धरातल भी दिवाना है।
कहीं बिंदी कहीं नुक्ता,
जमाना भी पुराना है।
चलीं कलमें जगी आशा,
कुशलता को बढ़ाना है।
थकी हिंदी गलत सोचा,
समग्रता को उठाना है।
भरी ओजें सभी मन में,
विचारें भी सुभाषित है ।
पढ़े पोथी गये काशी,
लिखें हिंदी अभाषित है।

भ्रमण करके चले आए,
हमेशा से प्रभाषित है।
निराला भी लिखें छंदें,
गढ़े वो साज भाषित है।
सुनो मेरी मुझे जानो,
पदों का भी विधाता हूँ।
सिहासन ने दिये उपमा,
अलंकारें गिनाता हूँ।
कहानी है किताबों में,
अज्ञानी को पढ़ाता हूँ।
गढ़ी शैली लिखा गीतें,
तराने भी सुनाता हूँ।

एस. के. पूनम
प्राथमिक विद्यालय बेलदारी टोला, फुलवारीशरीफ

मेरी नानी

कितनी प्यारी मेरी नानी
रोज सुनाती हमें कहानी।
परीलोक की सैर कराती,
बात -बात में हमें हँसाती।
मम्मी जब भी डाँट लगाती,
नानी आकर हमें बचाती।
मीठी-मीठी बातें कहतीं,
कभी नहीं औरों से डरतीं।

बड़े प्यार से हमें खिलाती,
मेरे पीछे वह दौड़ लगाती।
रूठे पर वह सदा मनाती,
कर दुलार हमको समझाती।
मेरी नानी सबसे प्यारी ,
सबसे प्यारी सबसे न्यारी।

मनु कुमारी
मध्य विद्यालय सुरीगाँव बायसी,
पूर्णियाँ

यही हमारी हिन्दी है

जिस वाणी में बोल रहा हूँ
यही हमारी हिन्दी है।
मॉम- डैड संस्कार न अपना,
माँ- बाबूजी हिन्दी है।।
मिस्टर- मैडम कहना छोड़ो,
श्री- महोदया हिन्दी है।
आंटी -अंकल क्यों बकते हो,
चाचा- चाची हिन्दी है।।
फ्रेंड -फ्रेंड कितना ही जप लो,
मित्रता का वह भाव नहीं।
मन के तारों को झनका दे,
पर भाषा में ताव नहीं।।
जब भी जागो, खेलो-खाओ
पढ़ लो गा लो हिन्दी में।
जब-जब हो मन बोझिल-बोझिल
दिल बहला लो हिन्दी में।।
अगर सामने सहपाठी हो,
करो नमस्ते हिन्दी में।
माता-पिता गुरु अग्रज को,
शीश नवाओ हिन्दी में।।
हिन्दी है संस्कृति हमारी,
सुनीति पाठ पढ़ाती है।
प्रेम- बंधुत्व और एकता में,
रहना सदा खिखाती है।।
जान बसी है इसमें अपनी
हर माथे की बिंदी है।
अब समय सब मिलकर कह दो,
राष्ट्र भाषा हिन्दी है।।

संजीव प्रियदर्शी
फिलिप उच्च वि० बरियारपुर, मुंगेर

मैं हूँ हिंदी

मैं हूँ हिंदी,
कहने के लिए,
आपकी बिंदी,
सर का ताज हूँ,
राज-काज का साधन,
भाषा की अभिव्यक्ति हूँ,
पतंगों की डोर संग,
भावनाओं की उड़ान हूँ,
देश की आन-बान-शान,
एकता की बुनियाद हूँ,
अक्षर का कराती हूँ ज्ञान,
ईश्वर ने जो दिया है वरदान,
शब्दों की तीखी धार हूँ,

शायद मैं ही आधार हूँ?
आत्मा एवं एकता का सूत्रधार,
देश की संस्कृति का प्रचारक हूँ,
तत्सम तद्भव का पाठ पढ़ाती,
वर्णमाला का साज सजाती,
बापू ने जिसे किया वरण,
महादेवी वर्मा ने दिया शरण,
जो सबके दिलों को जोड़ती,
सबके अरमानों को घोलती,

फिर भी एक बात,
जो मेरे मन को है कचोटती,
जिससे है देश का मान,
जो है राष्ट्र की पहचान,
फिर क्यों हो रहा उसका अपमान,
मिट रही मेरी मिली पहचान,
मेरे अस्तित्व पर ही लग रहा ग्रहण,
जिसे संविधान ने है अपनाया,
फिर दूसरी भाषा ने,
लोगों के दिलों में जगह कैसे बनाया?
अब क्या होगा मेरे भाई?
क्या फिर मिल सकेगी?
मेरी पुरानी खोई पहचान,
क्या मिल पाएँगे?
खोए सभी ओहदे तमाम।

विवेक कुमार
भोला सिंह उच्च माध्यमिक विद्यालय,
पुरुषोत्तमपुर
कुढ़नी, मुजफ्फरपुर

भगवान विश्वकर्मा

सजी धजी यह धरा सुहानी ,
कितनी प्यारी लगती है।
विश्वकर्मा जी की कृपा मात्र से ,
यह छटा निराली लगती है।।
अभियंता का काम जगत में,
यह अभियंता ही जानें।
विश्वकर्मा का नाम जगत में,
प्रथम अभियंता श्री ही मानें।।
ब्रह्मा जी की सृष्टि पश्चात,
उन्होंने जग को खूब सजाया।
रावण की स्वर्णमयी लंका को
अपने हाथों खूब सजाया।।

यंत्र विज्ञान के सृजनहार ने,
अद्भुत पुष्पक विमान बनाया।
मन की गति से चाल थी उसकी,
यह देख देवों का भी जी ललचाया।।
इंद्रपुरी और हस्तिनापुर का,
हर विधि नवनिर्माण कराया।
जहाँ वीरानगी थी जग में,
उस जगह को चमन बनाया।।
द्वारिका और स्वर्गलोक जगत को
मोती माणिक- सा चमकाया।
शंकर का त्रिशूल बनाकर ,
जगत में खूब प्रसिद्धि पायी।।

शस्त्र सुदर्शन चक्र बनाकर,
प्रभु विष्णु की कृपा भायी।।
यंत्र जगन्नाथपुरी परमेश्वर का
उन्होंने कौशल सहित बनाया।।
कृष्ण सखा सुदामा के ठौर को
झोंपड़ी से महल बनाया।
अपनी प्रतिभा से विश्वकर्मा ने
इसे सुसज्जित नगरी बनाई।
चकाचौंध इतनी थी उस नगरी में ,
सुदामा ने अपनी ठौर भुलाई ।।
धन्यवाद दे अपने अंतरंग सखा को ,
उनकी प्रभुता को पहचाना।
धन्य हुआ सुदामा का जीवन,
जगत के अभियंता को माना।।

कल कारखाने या मोटर कार जगत में,
सत्रह सितंबर को होती है पूजा,
लोग मगन होते हैं इस दिन,
और कार्य न होती दूजा।।
उनकी महिमा हर कोई जाने ,
उनकी कृपा हर कोई पहचाने।
धन्य हुआ है उनसे ही जीवन ,
जगत में हर कदम उन्हें पहचानें।।
उनसे नित आशीर्वाद लेने में ,
कभी धर्म नही बंधे होते हैं ।
उनको अपना प्रथम गुरु मानकर ,
अभियंता जोड़े हाथ खड़े होते हैं।।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर विद्यालय बैंगरा
प्रखंड -बंदरा , जिला- मुजफ्फरपुर

सुन री सखी

सुन री सखी!
यदि वे मुझसे कह न पाते,
लिख कर ही अपनी व्यथा छोड़ तो जाते।
विश्वास के बंधन बाँध तो जाते,
सखी काश ! वे मुझसे अपनी व्यथा कह पाते।
हाय ! हाय !
एक अविश्वास की रेखा खींच गए,
यों ही हमें तड़पता छोड़ गए।
मुझे सिय साबित होने से पहले ही रोक गए
मुझे सिय साबित होने से पहले ही रोक गए
आपकी चिंता राहुल थी यदि
फिर क्यों
शकुंतला पुत्र भरत को भूल गए?
नहीं माँ-बेटे आपके मार्ग की व्यवधान बनते,
हम आपके सद्चरणों की ही पहचान बनते।
सात जन्मों का साथ इस जन्म में ही क्यों भूल गए
हमें पल-पल तड़पता क्यों छोड़ गए?
यदि आपके मन में लाख तूफ़ान उठ रहें थे
मेरे मन में क्यों ज्वाला छोड़ गए
मेरे मन में क्यों लाखों सवाल छोड़ गए?
सच कहती हूँ सखी!
यदि वे मुझसे कहकर जाते,
विश्वास के धागे टूट न पाते।

अवनीश कुमार
व्याख्याता, बिहार शिक्षा सेवा

कहाँ गए वो दिन

कहाँ गए वो दिन ?
जिसकी दास्तां इतनी करीब थी ।
थे लोग प्यार में ऐसे पगे ,
जहाँ हर खुशियाँ नसीब थीं।।
प्यार के हर बोल पर ,
मिटती थी हर परेशानियाँ
प्यार की हर अदा पर ,
न रूखी रहती थी थालियाँ ।।
भेद न रखते थे दिल में कभी,
न थीं कहीं भेद की निशानियाँ।
खुशियों में समेट ली जाती थीं ,
किसी की भी परेशानियाँ ।।

मुश्किलों में भी साथ चलने की,
परम्परा कभी जाती नहीं थी।
था भाव अपनेपन का सदा,
प्रेम दिल से कभी खाली न था।।
वचन निभाना जानते थे,
थे वचन के वे पक्के अमीर।
नेक दिल के इंसान होते ,
न कोई था दिल का फकीर।।
न मन में खुदगर्जी थी तनिक भी ,
न लोग स्वार्थ में संलग्न थे ।
न जानते थे अधिक बातें बनाना,
निज कर्त्तव्य में अति निमग्न थे।।

बूढ़े माँ- बाप की इज्जत थी घर में,
बड़ों का मान था, सम्मान था।
घर खुशियों से था दमकता,
न किसी के प्रति असम्मान था।।
अपनी विरासत और संस्कृति से ,
लोगों का बेहद ही लगाव था।
वृद्धाश्रम की कोई कल्पना न थी ,
न बड़े बूढों से कोई दुराव था ।।
आज बाप, बेटे पर न यकीन करता ,
हाय ! कैसी यह बयार है !
बेटा, बाप का न ख्याल रखता,

हाय ! इस संबंध को धिक्कार है!
आज क्या से क्या हो गया,
समझ में तनिक भी आता नही है।
जिस माँ- बाप ने पाला पोसा यत्न से ,
आज कद्र उसका होता नहीं है।।
है क्या पता उसके पिता ने ,
यत्न उसके लिए कितने किए थे ?
अपने सपनों को जड़ से उजाड़ ,
उसके सारे सपने बुन दिए थे।।
आज स्वार्थ ही सर्वत्र जगत में ,
सर्वत्र स्वार्थ की तस्वीर है।
लोग अधिक बातें बनाना जानते
अब केवल बात की जंजीर है।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर विद्यालय बैंगरा
प्रखंड-बंदरा , जिला- मुजफ्फरपुर

कब तक हार से डरते रहोगे

कब तक यूँ ऐसे बैठे रहोगे,
कब तक हार से डरते रहोगे।
कदम आगे बढ़ाना होगा,
अगर लक्ष्य को पाना होगा।
हार-जीत का खेल भी होगा,
साहस तुम्हें दिखलाना होगा।।
कब तक झूठे सपने देखते रहोगे,
कब तक यूँ ऐसे बैठे रहोगे।।
जीत की प्यास जगानी होगी,
हार की पीड़ा भुलानी होगी।
है करना हासिल मंजिल तो,
हिम्मत तुम्हें दिखानी होगी।।

कब तक हाथ पे हाथ मलते रहोगे,
कब तक यूँ ऐसे बैठे रहोगे।।
आगे तुझको बढ़ना होगा,
कुछ-न- कुछ तो करना होगा।
श्रम से जीवन सजाना होगा,
दुनिया को दिखलाना होगा।।
फिर तुम भी नया,
इतिहास रचते रहोगे,
कब तक यूँ ऐसे बैठे रहोगे।।

गुड़िया कुमारी
मध्य विद्यालय बाँक, जमालपुर, मुंगेर

बेटी के सपने

बेटी के सपने की उड़ान को,
अब कमतर कर नही तौलेंगे।
बेटी सफलता की उड़ान है,
उस पर कीचड़ नही उछालेंगे।।
बेटा बेटी के अंतर को,
अब पाटना बहुत जरूरी है।
जब यह संसार बेटी से है तो,
सब इसके बिना अधूरी है।।
समता का संबंध यहाँ पर,
भेद न मानें बेटा बेटी में।
लक्ष्य हो जितना बड़ा करें ,
इतिहास बंद है पेटी में।।
कल्पना,सुनीता ने इतिहास रचदिया
अंतरिक्ष की ऊँची उड़ान में।
अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया ,
अंतरिक्ष विज्ञान की शान में।।

बेटी लक्ष्मी का रूप होती है,
यह सरस्वती की अवतारी है।
दुर्गा बन वह पराक्रम करती,
सच में नौ रूपों की अधिकारी है।।
खेल -कूद में भी बेटी ने,
नवल इतिहास बनाया है।
विश्व रंगमंच पर भी भारत का,
स्वाभिमान बार-बार जगाया है।।
सभी क्षेत्र की यही हालत है,
बेटी ने सदा जलवा दिखलाया है।
धरती से अंतरिक्ष उड़ान तक,
अपनी सत्ता को झलकाया है।।

सीमा में प्रहरी की सेवा हो,
या विमान की विशद उड़ान में।
सर्वत्र उसने सफलता पाई है,
अमित उद्यम के मुस्कान में।।
भाषा में भी अव्वल दर्जा पाई,
सुभद्रा कुमारी चौहान ने।
अल्पवय में ही शब्दावली घोला,
अपनी अनुपम कृति उद्यान में।।
बेटी दोनों कुल की मर्यादा है,
दोनों कुल की तारणहार है।
उसी के वश में सृजन सृष्टि है,
वही अनुपम देती उपहार है।।
बेटी दिवस के शुभ अवसर पर,
आज ही सब उसे आश्वस्त करें।
उसके सपने, उसकी ऊर्जा को,
उसे सब मिलकर प्रशस्त करें।।

अमरनाथ त्रिवेदी

उत्क्रमित उच्चतर विद्यालय बैंगरा
प्रखंड- बंदरा, जिला- मुजफ्फरपुर

बेटियाँ

धन्य वह गेह, जहाँ
खिलखिलाती हैं बेटियाँ,
धन्य वह गेह, जहाँ चहचहाती
हैं बेटियाँ,
धर्म-ग्रंथ कहते हैं, गृह-लक्ष्मी
होती बहु-बेटियाँ,
सारे देवों का वास वहाँ, जहाँ
सम्मानित हैं बेटियाँ,
बेटी निज क्रिया-चरित्र से
करती दो कुलों को रौशन,
गिरि-शिखर, अम्बर को भी
छूने में कम नहीं हैं बेटियाँ,
आत्मा में लिंग का भेद कहाँ,
पुत्र-सुता होते हैं एक समान,
दोनों की एक ही होती क्षमता,
दोनों बढ़ाते हैं कुल का मान,
किन्तु अवसर जब भी मिले,
मिले दोनों को एक समान,
अवसर जब भी मिलता है,
कुछ भी कर गुजरती बेटियाँ ,
पर ईश्वर ने स्त्रियों को ही,
करुणा-ममता का दिया वर,
इनकी कोख से ही होता है,
महापुरुषों का जन्म भूमि पर,
बड़े-बड़े वीर लाल उत्पन्न कर,
भूमि को कृत्य करती बेटियाँ।

गिरीन्द्र मोहन झा

+2 शिक्षक, भागीरथ उच्च विद्यालय चैनपुर- पड़री, सहरसा

मेरी बेटियाँ

मेरी बेटियाँ!
मेरे प्रतिरूप,
मैं बसती हूँ उनमें,
अंतस्थ बिल्कुल अंदर,
आद्योपांत सर्वांग,
प्राणवायु की तरह।
मेरी बेटियाँ!
मुस्कुराहटों में,
आशाओं में,
बातों में,
आख्यानों में,
संवाद में,
सहेली की तरह।
मेरी बेटियाँ!

नाराजगी में,
मनाने की आशा,
प्रेम में,
अनुभूति का अहसास,
रुदन में,
मखमली अहसास की तरह।
मेरी बेटियाँ!
संघर्ष में,
विजय को प्रयाण,
जीवन पथ पर,
संस्कार का साथ,
त्योहारों में,
संस्कृति के अहसास की तरह।
मेरी बेटियाँ!
संबंध में,
ओज और विश्वास,
परिवार में,
साथ और संवाद,
जीवन में,
परस्पर सम्मान,
माधुर्य शहद अहसास की तरह।
मेरी बेटियाँ!
चहकती बुलबुल,
पूर्णता का अहसास कराती,
मानव जीवन की रक्षा को समर्पित,
जीवन मूल्यों को संवर्धित करतीं,
संवेदनाओं के प्रहरी की तरह!

डॉ स्नेहलता द्विवेदी 'आर्या'
उत्क्रमित कन्या मध्य विद्यालय शरीफगंज , कटिहार

बेटियाँ

बेटा वंश तो वंश की नींव होती है बेटियाँ!
दो कुलों की आन-बान-शान होती है बेटियाँ!
कुदरत जब हो मेहरबां तो परियों के देश से आती है बेटियाँ!
ईश्वर के वरदान और सौभाग्य से धरा पर आती है बेटियाँ!
आज हर क्षेत्र में अपना परचम लहराती है बेटियाँ!
दुर्गा-लक्ष्मी-काली-सी शक्तिशाली होती है बेटियाँ!
विद्या का वरदान होती है बेटियाँ!
संस्कारों की अभिमान होती है बेटियाँ!

अधरों की मीठी मुस्कान होती है बेटियाँ!
तपती तपन में फुहार-सी शीतल होती है बेटियाँ!
विहगों के कलरव और तितली-सी चंचल होती है बेटियाँ!
संस्कृति की धरोहर, त्योहारों की रौनक होती है बेटियाँ!
सभ्य समाज की अहम योगदान होती है बेटियाँ!
ममता, प्यार, दुलार और सब पर जान लूटाती है बेटियाँ!
बेटा भाग्य किंतु सौभाग्य की परिभाषा होती है बेटियाँ!
इतना ही नहीं वंश के नींव की सकल विस्तार होती है बेटियाँ!

मधु कुमारी
उत्क्रमित मध्य विद्यालय भदौरिया, कटिहार
कटिहार

मेरी हर यात्रा

सुन री सखी-सहेली!
वे राम बने, मैं मर्यादा की सीमा बनूँ,
वे कृष्ण बने, मैं राधा की काया बनूँ,
वे विष्णु बने, मैं उनकी हरिप्रिया बनूँ,
वे शिव बने, मैं शक्ति का आधार बनूँ,
वे सिंह बने, मैं उसके साहस की ध्वनि बनूँ,
वे देव बने, मैं उनकी दिव्यता बनूँ,
वे गंधर्व बने, मैं रिझाती अप्सरा बनूँ,
वे चाँद बने, मैं उसकी शीतलता बनूँ,
वे दीप बने, मैं चटकती लौ बनूँ,
वे स्वामी बने, मैं उनके चरणन की दासी बनूँ,

वे धरती, आकाश बने, मैं उनकी अनंत बनूँ,
वे पुष्प बने, मैं उसकी मधुरता बनूँ,
वे प्रिय बने, मैं उनकी प्रियंवदा बनूँ,
वे सागर बने, मैं उसकी लहर बनूँ,
वे प्राण बने, मैं अंतर्मन बनूँ,
वे मंदिर बने, मैं शांति बनूँ,
वे प्रभु बने, मैं हरिकीर्तन रहूँ,
वे मस्जिद बने, मैं सुकून बनूँ,
वे धर्म बने, मैं धर्म-ध्वजा बनूँ,
वे मुरली बने, मैं उनकी अधर रहूँ,
वे हिमालय बने, मैं गंगोत्री-यमुनोत्री बनूँ,
वे अग्नि बने, मैं उसकी दीप्ती बनूँ,
वे उत्सव बने, मैं उसकी भव्यता बनूँ,
वे उमंग बने, मैं सतरंग बनूँ,
वे रात्रि बने, मैं उसकी रैन बनूँ,
वे घर बने, मैं उसकी आत्मा बनूँ,
वे भाषा बने, मैं उसकी सुंदरता बनूँ,
वे व्याकरण बने, मैं नियमों का आधार बनूँ,
वे तीर्थ बने, मैं उनका पावन बनूँ,
वे मेरे स्वर बने, मैं उनकी अक्षरा रहूँ।
वे वे न रहें मैं मैं न रहूँ,
वे हममें रहें हम उनमें रहें,
वे हमसे रहें हम उनसे रहें,
सुन री सखी!
बस इतनी- सी है मेरी साधना
उन संग पूरी हो मेरी हर यात्रा।

अवनीश कुमार
व्याख्याता (बिहार शिक्षा सेवा)

अद्वितीय कवि दिनकर

एक अद्वितीय कवि दिनकर
केवल बातों पर ही बात नहीं,
तथ्यों पर प्रखर रूप से बात करे।
कवि वैसा हो जो यथार्थ धरातल पर,
प्रखरता से दिल में उतर बरसात करे।।
ओजस्वी भाषा उसकी हो,
जो जीवन में आस सजाए।
जीवन के प्रत्येक मार्ग में,
घर-घर में अलख जगाए।।
केवल जन्म से नहीं कर्म से भी,
उनकी होती थी जय जयकार।
उनकी भाषा उनकी लेखनी में,
सदा मिलती थी कुछ पाने की ललकार।।

नमन करें ऐसे कविवर का,
सिमरिया में जिनका अवतरण हुआ।
अपने देश, अपनी भाषा में,
न कभी यश, कृति का क्षरण हुआ।।
थे कवियों में वे प्रखर कवि,
भाषा पर था उनका अधिकार।
उनकी वाणी में क्रांति स्वर थे,
था समता का भी उच्च विचार।।
अंग्रेज हुकूमत भी थर्राती थी,
इनकी कविता सुन-सुन कर।
जन चेतना भी जगा दिया था,
सारे भारत में घूम -घूम कर।।

जनमानस में ऐसी धाक जमी,
वह कभी नहीं जानेवाली।
अब काया उनकी नहीं यहाँ,
पर कालजयी रचना नही मिटनेवाली।।
भाषा का ऐसा चतुर पुरोधा,
अब कहाँ हमें मिलनेवाला।
जो ज्योति जलाई है ज्ञानदीप की,
अब कभी नहीं बुझनेवाला।।
रश्मिरथी लिखकर उन्होंने,
जग को ढेरों ज्ञान दिया।
उसमें ओज भावना भरकर ,
हिंदी भाषा का सम्मान किया।।

कुरुक्षेत्र , परशुराम की प्रतीक्षा,
उनकी रचनाओं के खम्भ हैं।
उर्वशी, द्वंद्व गीत ,रसवंती आदि
उनकी काव्यकृति के स्तंभ हैं।।
संस्कृति के चार अध्याय लिख
गद्य भाव को भी परिपुष्ट किया।
अपने बलबूते ही हिंदी भाषा को
और अधिक परिष्कृत किया।।
एक अद्वितीय कवि थे दिनकर,
जिनकी रचना का कोई जोड़ नहीं।
उसमें भाषा की थी मर्यादा ,
उनकी कविता का कोई तोड़ नहीं।।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर विद्यालय बैंगरा
प्रखंड- बंदरा, जिला- मुजफ्फरपुर

गीत

आज जयंती है दिनकर की, अपनी रचना लिखकर गाओ।
जिसने लिखकर समय को मोड़ा, उनकी रचना सुनो सुनाओ।।
विषम काल में जीवन पाकर, निर्भयता से लिखना सीखें।
बीत गए दशकों जो उनके, जीवन से कुछ करना सीखें।
लिए राग रस राष्ट्रप्रेम के, स्वयं डूबो और डूबाओ।
जिसने लिखकर समय को मोड़ा, उनकी रचना सुनो सुनाओ।।
"हुंकार" की एक चिंगारी, देखते रह गए खड़े-खड़े।
गुलामी की जंजीर हाथ से, निकलेगी सब बोल पड़े।
समय काल को देख परखकर, एक बार पुनः दोहराओ।
जिसने लिखकर समय को मोड़ा, उनकी रचना सुनो सुनाओ।।
हिंदी के किए अपमान पर, सिंह गर्जना करते रहते।
देश विदेश के भारतीयों में, राष्ट्र भावना भरते रहते।
मिला है अवसर आज हमें तो, देशविरोधी मार भगाओ।
जिसने लिखकर समय को मोड़ा, उनकी रचना सुनो सुनाओ।।

रामपाल प्रसाद सिंह
मध्य विद्यालय दरवेभदौर, पंडारक, पटना

मनहरण घनाक्षरी

उपदेश देकर जो, जिंदगी सवार लेते,
बेचकर निज कर्म, सहज बनाते हैं।
दुनिया को कहे फिर, ,बेकार हैं मोती हीरे,
खुद छिप-छिपकर, कुबेर सजाते हैं।
उजाला में सत्य जब, नंगा नाच करता है,
अँधेरा सहारा देके, उसे ललचाते हैं।
माया फैली दुनिया में, दूजे को बचाने वाले,
उससे लिपट खुद, पापी बन जाते हैं।

रामपाल प्रसाद सिंह

भदौर पंडारक पटना, बिहार

इंद्रधनुष

नभ में इंद्रधनुष को
देखो,
कितना प्यारा
लगता है।
मन करता है इसको
छू लें,
सुंदर न्यारा लगता
है।।
प्रथम रंग बैंगनी
कहाता,
रंग दूसरा है नीला।
मध्य आसमानी
रक्ताभा,
हरे संग चमके
पीला।।

नारंगी की छटा
निराली,
मन को नित हर लेती
है।
पुलकित होते सारे
बच्चे,
अनुपम सुख यह देती
है।।
रिमझिम वर्षा जब
थम जाती
रंग धनुष मोहक
लगते।
बच्चे हँसते उछल-
उछल कर,
नित्य नाचते खुश
रहते।।

देव कांत मिश्र 'दिव्य'
मध्य विद्यालय धवलपुरा,
सुलतानगंज, भागलपुर, बिहार

राजू के घर चली मासी

राजू के घर चली मासी
बच्चों के लिए ली गरमा-
गरम समोसे।
रास्ते मे बंदर आया,
झपटा थैला, ले गए
समोसे।
मासी का उतरा चेहरा
ऐसे- जैसे
लगे लाल-लाल टमाटर
जैसे।।
मासी आई खाली हाथ।
दौड़ा राजू मासी के
पास।।
मासी क्या-क्या लाई हो,
टॉफ़ी- वॉफ़ी कहाँ छुपाई
हो?

मासी बोली ली थी तेरे
लिए गरमा-गरम समोसे
बन्दर झपटा समोसे
ऐसे-जैसे,
तू झपटता मुन्नी पर
जैसे।
तुझे चाहिए यदि टॉफ़ी-
वाफ़ी
पहले मुन्नी से चल मांग
माफ़ी।
राजू ने मुन्नी से मांगी
माफ़ी,
मासी ने दिलाई राजू-
मुन्नी को टॉफ़ी।

अवनीश कुमार
व्याख्याता (बिहार शिक्षा सेवा)
प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय विष्णुपुर, बेगूसराय

बेटी के मायने

बेटी है तो यह घर संसार है।
बेटी है तो संबधों के आधार हैं।।
बेटी है तो संबंधों में संचार हैं।
बेटी है तो संबंधों के मधुर जाल हैं।।
बेटी है तो सभ्यता का आधार है।
बेटी है तो संस्कृति का विस्तार है।।
बेटी है तो तरह तरह के संस्कार हैं।
बेटी है तो घर में खुशियों के आधार हैं।।
बेटी है तो घर में रक्षाबंधन है।
बेटी है तो भैया दूज है।
बेटी है तो सरस्वती की पूजा है।
बेटी है तो दुर्गा की पूजा है।
बेटी है तो लक्ष्मी की पूजा है।
बेटी है तो शादी ब्याह है।
बेटी है तो भविष्य का विश्वास है।
बेटी है तो जीवन में उल्लास है।
बेटी है तो सपनों की उड़ान है।
बेटी है तो संबंधों की पहचान है।
बेटी है तो घर की सुंदरता है।
बेटी है तो घर की रमणीयता है।
बेटी है तो घर में सफलता है।
बेटी है तो घर में मुस्कान है।
बेटी है तो घर में मेहमान हैं।

बेटी है तो घर की लाज है।
बेटी है तो घर की शान है।
बेटी है तो सुखद सृष्टि है।
बेटी है तो सुखद स्मृति है।
बेटी है तो सुखद कृति है।
बेटी है तो सुखद आकृति है।
बेटी है तो जीवन की आशा है।
बेटी है तो जीने की अभिलाषा है।
बेटी है तो अनुशासन की भाषा है।
बेटी है तो जीवन जीने की परिभाषा है।
बेटी है तो घर की जान है।
बेटी है तो सारा जहान है।।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर विद्यालय बैंगरा
प्रखंड- बंदरा, जिला- मुजफ्फरपुर

जंगल में मंगल

संग हरियाली के जी ले पल दो पल,
करती सरिता जहाँ पग-पग कल-कल।
मनहर-सी छटा छाई धरा पर हरपल,
करते अंबर जिसकी रखवाली पल-पल।।
आओ बच्चों करें जंगल में मंगल।
झरने जहाँ करते हैं कलरव,
हँस कर फूल मिलते हैं पग-पग।
करता नृत्य मयूरा जहाँ सुंदरम,
शांत झील का दृश्य लगता आकर्षम,
कोयल संग पपीहा गाती गीत मधुरम,
झूम उठे सारे उपवन और बोलें मंद-मंद
आओ करें सब मिल जंगल में मंगल।

देखो घिर आई बादल नभ में श्यामल,
पायल- सी बजती है बूँदे जहाँ छम-छम।
नभ में चमक रहे हैं तारे देखो चम-चम,
आओ बच्चों खेलें यहाँ सब घुल-मिल,
धरती पर छाई चारों ओर चहल-पहल।
सज गई हरियाली से धरा का आँचल
तो क्यों न मनाएँ हम जंगल में मंगल।

मधु कुमारी
उ० म० वि० भतौरिया
हसनगंज, कटिहार

खेल

खेल-खेल कर बड़े हुए हम
घुटनों से अब खड़े हुए हम।
है इससे कुछ ऐसा नाता,
बच्चे बूढ़े सभी को भाता।
बचपन का यह मित्र महान,
कह गए हैं यह चतुर सुजान।
है स्वास्थ्य का एक प्रहरी यह,
स्फूर्ति भरती मानो महरी यह।
जग का है चक्रवर्ती सम्राट,
विविध रूपों में बना विराट।

है व्यायाम का दूजा रूप,
बनाए सुडौल यह स्वरूप।
तन को देता स्फूर्ति है खेल,
मन प्रफुल्लित करता खेल।
स्पर्धा में जब होता है खेल,
उमड़ पड़ती दर्शक का मेल।
मन की कालिमा दूर भगाता,
पाठक को प्रेम पाठ पढ़ाता।।

राम किशोर पाठक

प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश
पालीगंज, पटना

पेजर का भय

काग बोलता रहा डाल पर,
क्या लिखा दुनिया के भाल पर?
तेरे अस्तित्व पर मैं टिका हूँ,
तुझसे बहुत मैं सीखा हूँ।
विस्मित हूँ बदलते चाल पर।
कौवा बोल रहा डाल पर।
हक मारी चोरीचपाटी,
दौड़ा मैं हूँ सागर घाटी।
रो रहा बस एक सवाल पर।
कौवा बोल रहा डाल पर।
“पेजर” सुनने में प्यारा है,
यह जानलेवा अंगारा है।
काँव- काँव होता बवाल पर।
कौवा बोल रहा डाल पर।

मोबाइल पर आँख गड़ाए,
बच्चों तुम रहते मुरझाए।
नजर टिकाए विश्वभाल पर।
कौवा बोल रहा डाल पर।
चेतों बच्चों नजर हटाओ,
कबड्डी गोली हाथ लगाओ
“अनजान” रखें कर कपाल पर।
कौवा बोल रहा डाल पर।
शिक्षा देती है यह घटना,
अतिशय से जीवन भर बचना।
चाँटा वरना लगे गाल पर।
कौवा बोल रहा डाल पर।

रामपाल प्रसाद सिंह
मध्य विद्यालय दरबे भदौर पंडारक, पटना

आपके द्वारा दिया गया अमूल्य समय हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि आपके पास कोई सुझाव हो, तो कृपया हमें अवगत कराएं, जिससे हम और भी बेहतर कार्य कर सकें।

क्या आप बिहार के सरकारी विद्यालय के शिक्षक हैं ?
आपको अपनी रचना भी प्रकाशित करनी है ?
नीचे दिए गए वेबसाइट,ईमेल एवं व्हाट्सप्प के माध्यम से जुड़े।

writers.teachersofbihar@gmail.com

padhyapankaj.teachersofbihar.org

+91 7250818080 | +91 9650233010